आध्यात्मिक मूल्यों का अनुसरण करना जरूरी - दादी जानकी जी

माउंट आबू, 16 जून। ब्रह्माकुमारी संस्थान की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा है कि भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण एवं उज्जवल भविष्य की अहम जिम्मेदारी को सफलतापूर्वक अंजाम देने के लिए शिक्षकों को पूर्ण रूप से आध्यात्मिक मूल्यों का अनुसरण करना होगा। यह बात उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्थान के ज्ञान सरोवर परिसर में संस्थान के शिक्षा प्रभाग की ओर से स्व-सशक्तिकरण के लिए आध्यात्मिकता व मूल्यों की शिक्षा विषय पर आयोजित सेमीनार के उदघाटन सत्र को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि दया धर्म का मूल है, पाप का मूल है अभिमान। देहभान से अहंकार पैदा होता है जिससे आत्मिक मूल्यों का ह्रास होने से उच्चकोटि की शिक्षा को समावेश करना कठिन हो जाता है। इसलिए परमात्म चिंतन के साथ स्व की वास्तविकता का ज्ञान आवश्यक है जिससे आतंरिक मूल्यों को निखारकर शिक्षा को स्वरूप में लाया जा सकता है। परमात्म प्यार से हम आत्म अभिमानी बन सकते हैं। जिससे अनेक कष्टदायी सांसारिक स्मृतियां समाप्त हो जाती हैं। शुभ चिन्तन में रहने से सदा खुशी की मस्ती चढ़ी रहेगी। खुशी जैसी खुराक नहीं , चिन्ता जैसा मर्ज नहीं। इससे मुक्ति के लिए हमें अपने मन में आने वाले व्यर्थ संकल्पों की बाढ़ को रोकना होगा। आत्मस्थिति में स्थित होने से संकल्पों को सही दिशा में मोड़ कर जीवन में स्थाई रूप से सुख शांति का अनुभव किया जा सकता है।

शिक्षा प्रभाग अध्यक्ष बी.के. निर्वैर ने सहभागियों का आहवान करते हुए कहा कि सम्मेलन में इन तीन दिनों तक व्यापक स्तर पर विचार विमर्श कर मूल्य निष्ठ शिक्षा से संबधित ऐसे सूत्र प्राप्त करें जिन्हें उच्च शिक्षा के क्षेत्र में स्थाई तौर पर लागू किया जा सके। सहजराजयोग का अभ्यास मनुष्य को सर्वगुण संपन्न, संपूर्ण निर्विकारी बनाने में समर्थ है, इसी स्थिति से विद्यार्थी वर्ग आने वाले समय में समाज को नई दिशा देने में अहम भूमिका अदा कर सकेंगे। साइंटिफिक योगा कान्फ्रेंस दिल्ली में प्रस्तुत एक अमेरिकी वैज्ञानिक एवं एक भारतीय सर्जन की प्रस्तुति से यह स्पष्ट हो चुका है कि मस्तिषक अच्छी नींद के कारण खाली होने पर श्रेष्ठ विचारों को आत्मसात कर सकता है। मगर आज अच्छी नींद कहां है? राजयोग के अभ्यास से हम एक शांत मस्तिष्क प्राप्त करते हैं और आध्यात्मिकता को अपनाकर अपने आत्मिक मूल्यों को जागृत करते हुए शांतिमय जीवन जीने की कला सीख सकते हैं।

दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. प्रेम शारदा ने कहा कि जिस प्रकार मनुष्य के लिए हवा, पानी के बिना जीना असंभव है उसी तरह आध्यात्मिकता के बिना समाज का उत्थान संभव नहीं है। युनाईटेड नेशन्स की ओर से आयोजित वैज्ञानिकों एवं शिक्षाविदों के सम्मेलन में इस बात को अहमियत दी गई है कि शिक्षा जानने के लिए, करने के लिए, एक साथ मिलकर रहने के लिए, बनने के लिए होती है। जिसे मूर्तरुप देने को आध्यात्मिकता का सहारा लेना आवश्यक है।

प्रभाग उपाध्यक्ष बी.के. मृत्युजंय ने कहा कि मूल्यहीन जीवन, अशांत विश्व, सौहार्दहीन रवैया एवं प्रज्ञा रहित शिक्षा विश्व पर बोझ है। राष्ट्र व विद्यार्थियों का निर्माण करने के लिए आध्यात्मिकता को अपनाना होगा।

इस अवसर पर राजयोग शिक्षिका शीलू बहन, प्रभाग के राष्ट्रीय संयोजक हरीश शुक्ला, इंदौर देवी अहिल्या विश्वविद्यालय प्राचार्य प्रो. राजीवशर्मा समेत अन्य वक्ताओं ने भी विचार व्यक्त किए।